E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III

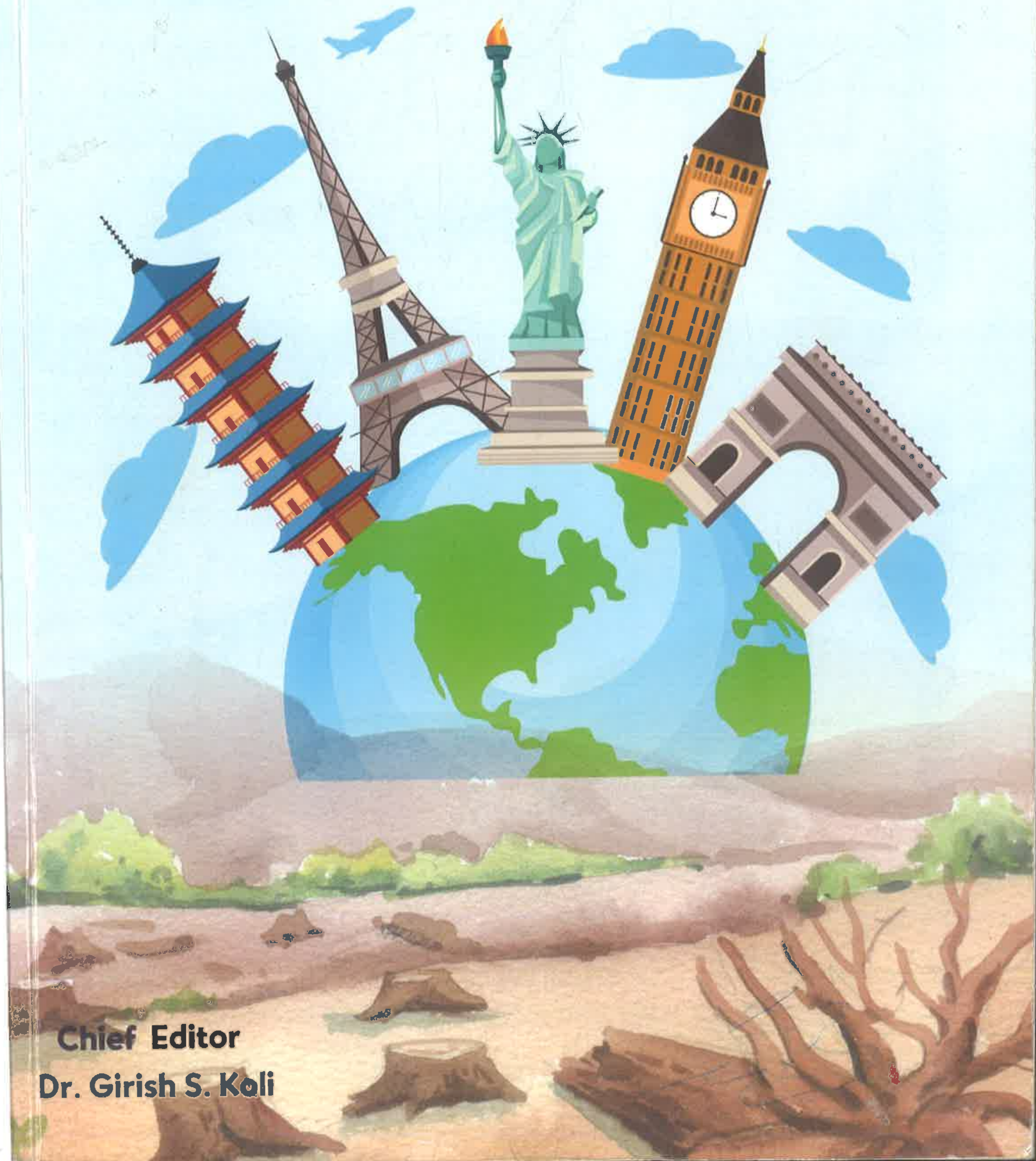

Chief Editor
Dr. Girish S. Koli

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

Sr. No	*Title of the Paper*	Author's Name	Pg.No
24	बाल कहानी साहित्य में नारी चित्रण	प्रो.डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन के . वि . शिल्पा	93
25	नन्द किशोर नवल जी की समकालीन काव्य -यात्रा	अपर्णा शुक्ला	97
26	गोरखनाथ और भारतीय संस्कृति में योग	डॉ. अरुण प्रसाद रजक	100
27	राष्ट्रीय चेतना और हिन्दी पत्रकारिता	डॉ. जयदीप धोबी	102
28	जीवन मूल्य - धर्म एवं आध्यात्म के परिपेक्ष्य में	डॉ.मंजु अरोरा	105
29	समकालीन उपन्यासों में स्त्री चेतना	प्रा. किसन गावित	109
30	शिवमूर्ति की कहानी 'सिरी उपमा जोग' में परित्यक्ता जीवन	श्री हरिराम	111
31	वृद्धावस्था में ध्यान योग के लाभ : एक अध्ययन	मेघा जुग्गी / डॉ. नईम अहमद	115
32	छत्तीसगढ़ी लोककला के वरेण्य पुरूष- दाऊ रामचन्द्र देशमुख	हेमपुष्पा नायक, डॉ.इशाबेला लकड़ा	119
33	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में डॉ अनंत राम मिश्र 'अनंत' कृत 'उग आई फिर दूब' का मूल्यांकन	डॉ. रश्मि सूद दिग्विजय सिंह	122
34	पाश्चात्य शिक्षा नीति: लॉर्ड मैकाले की भूमिका	डॉ. अरुणा शर्मा / कु. रूबी	125
35	महान पर्यावरणविद: गौरादेवी	डॉ. दीपक कुमार / राज सिंह	130
36	शैलेश मटियानी के उपन्यासों में गरीबी और बेरोजगारी	डॉ. सुबिया फैसल	134
37	मराठी नाटकातील स्त्रीपुरुष प्रतिबिंब	प्रा. उन्नती संजय चौधरी	137
38	सुधारणावादी विचार मांडणारे मराठी साहित्यातील क्रांतीयोद्धा : महात्मा फुले	डॉ. शकुंतला एम. भारंबे	144
39	वर्तमानाला जागविणारी दिपध्वज कोसोदेंची 'संसद' मधील कविता	प्रा.डॉ. जतिनकुमार श्रीधर मेढे	149
40	भारत-अमेरिका अंतरराष्ट्रीय संबंधात काळानुरूप झालेल्या बदलांचा एक चिकित्सक अभ्यास	प्रा. विनोद समाधान गाढे	152
41	शिक्षण - गतिमंद असणाऱ्या मुलांचे...	श्री.भोळे धनंजय शिवाजी	157
42	शिक्षकांच्या ताण – तणावविषयक कारणे आणि व्यवस्थापणाचा अभ्यास	प्रा. डॉ. रवी नंदलाल केसुर स्वप्निल विजय धांडे	162
43	प्रतिभावंत साहित्यिक : अण्णा भाऊ साठे	प्रा.डॉ.माणिक माधव बागले	166
44	डॉ. सुबोध जावडेकरांची कथा : मानवी वृत्ती व प्रवृत्ती	प्रा. डॉ.जयदेवी पवार	169
45	वारकरी संतांच्या साहित्यातील मानवतावादी विचार विशेष संदर्भ – संत तुकाराम	डॉ. दिनेश हिम्मतराव पाटील	172
46	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार	प्रा.विजय गाढे	175
47	जळगांव जिल्ह्यातील केळी उत्पादकांची सध्यस्थिती: समस्येचे चिकित्सक अध्ययन	डॉ. रवी नंदलाल केसूर आकाश एस. तायडे	177
48	ईशान्य भारत जागतिक पर्यटनासाठी अज्ञात असलेला स्वर्ग	प्रा. डॉ. विशाल दिलीप वाणी	182

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

24

बाल कहानी साहित्य में नारी चित्रण

के . वि . शिल्पा
शोधार्थी ID: UP22G9650003
वेल्स इन्स्टिट्यूट ऑफ सायन्स,
टेक्नॉलॉजी अँड ॲडव्हान्स्ड स्टडीज, पल्लवरम , चेन्नई

प्रो.डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
शोधनिर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभागाध्यक्ष
वेल्स इन्स्टिट्यूट ऑफ सायन्स,
टेक्नॉलॉजी अँड ॲडव्हान्स्ड स्टडीज, पल्लवरम , चेन्नई

साहित्य समाज का दर्पण है। हमारे समाजिक, वैयक्तिक विकास का हितिहास साहित्य में प्राप्त होता है। साहित्य में मानव जीवन की विकास यात्रा की पूर्ण रूप प्रकट होता है। साहित्य नारी के बिना अधूरा है। नारी के कई रूप पत्नी,माँ,प्रेयसी, सखी, रानी, दीदी,बाबी,चाची,आदि हमे साहित्य में मिलते हैं।

नारी, नर का मादा रूप को नारी कहते हैं। संसार प्रकृति पुरुष का संयोग है। एक के बिना दूसरा अधूरा है। आदिकाल से आधुनिक काल तक की साहित्य में नारी की नवरस वर्णन के बिना असंपूर्ण है।

भारतीय संस्कृती में नारी पूजनीय है। शक्ति की स्वरूपिणी माँ दुर्गा, ज्ञानप्रदयनी माँ सरस्वती ,संपन्नदायिनी माँ लक्ष्मी । मानव जीवन इनकी कृपा के बिना सफल नहीं हो पाएगा। वैदिक काल में नारी पुरुष समान सम्मान पाती थी। कालगति में नारी की सम्मान में गिरवट शुरू हुवा। नारी घर और बाहर संभालनेवाली धीरे-धीरे घर तक सीमित होगायी। मध्यकाल में ज़्यादातक नारी खड़ी नियमों की शृंखला में जकड़ गयी है। परदाविधा,सतीसहगमन आदि नारी स्वतंत्रता को छीन लिया है।आधुनिक काल में नारी जीवन थोड़ाबहुत बदलाव लाया है। आज नारी पुरुष के समान सभी क्षेत्रों में अपना सत्ता दिखा रही है। घर के साथ-साथ काम भी कर रही है।

गांधी जी नारी की सम्मान करते थे। स्वतंत्रता संग्राम में नारियों को भाग लेने केलिए प्रोत्साहित किए थे। नारी के बारे में गांधी जी का कहना है कि- 'मैं बेटे और बेटियों के साथ बिल्कुल एक जैसा व्यवहार करूंगा।जहाँ तक स्त्रियों के अधिकार का सवाल है , मैं कोई समझोत नहीं करूंगा। नारी पर ऐसा कानूनी प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए जो पुरुषों पर नहीं लगाया गया हो। नारी को अबला कहना उसकी मानहानि करना है। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक है । आपसी सहयोग के बिना दोनों का अस्त्रीत्व असंभव है। स्त्री पुरुष की सहचरी है। उसकी मानसिक शक्तियां पुरुष से जरा भी कम नहीं है।'
प्रस्तुत प्रधान मंत्री मोदी जी नारी की आदर करते हैं। उन्होंने नारी सशक्ति करण देश की विकास केलिए आवश्यक माना है । **नरेंद्र मोदी** जी द्वारा महिला दिवस पर कहा गया मशहूर वाक्य **"देश की तरक्की के लिये पहले हमें भारत के महिलाओं को सशक्त बनाना होंगा'**। एक बार जब महिला अपना कदम उठा लेती है, तो परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर बढ़ता है। "

जब घर में लड़की पैदा होती है तब कहते है –'घर में लक्ष्मी आयी है'। ऐसी संस्कृती है .हमारे भारत में। शादी के बाद जब ससुराल में सब को खुशी रखने केलिए अपना पूरा कोशिश करती है। जैसे - घर का काम संभालना, घर में बड़ों का सेवा करना ,बच्चों का खयाल रखना, आदि। घर में खुशी की कारण बनती है।

हिन्दी साहित्य में नारी संबंध कई विषयों पर विमर्श किया गया है। नारी की समस्या जो पारिवारिक,समाजीक विषयों से जुड़ा हुवा है। बाल साहित्य साहित्य का एक सम्पन्न साहित्य है। बच्चों केलिए बड़ों के द्वारा लिखा गया साहित्य को बाल साहित्य कहते हैं। बच्चों को साहित्य से परिचय माँ,दादी और नानी प्रप्रथम कराते हैं। बच्चों को खिलाते वक्त, नहाते वक्त ,सुलाते समय में गाना, भजन, गीत और लोरी गाते हैं। यहीं से बच्चे साहित्य से परिचय होते हैं।परिवार और समाज बच्चों के जीवन पर प्रभाव डालता है। आम तौर पर माँ और माँ की बातों से बच्चे समाज को समाजते हैं। जो भी प्रश्न और शंका बच्चों के मन में उठता है,वह प्रथम माँ से ही पूछता है। बच्चों के जीवन विकास में माँ की योगदान महत्वपूर्ण होती है।

माँ,दादी और नानी से कहानी सुने बिना बच्चे सोते नहीं हैं। कहानी बच्चों को बहुत पसंद होते हैं। सभी के जीवन में बचपन एक अनमोल समय होता है। छुट्टियों में दादी या नानी के घर गाँव जाना पूरा दिन बाहर खेलकर रात दादी के पास लेट कर कहानी सुनते-सुनते सोजाना। इन कहानियों के जरिए नानी दादी और माँ बच्चों को वीर ,धैर्य ,साहसी ,कर्तव्यनिष्ट ,सतगुण आदि सीख देती हैं।

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

बाल साहित्य में विज्ञान,नैतिक मूल्य ,सतभाव ,धार्मिक विषय आदि ज्ञान मिलती है। बाल साहित्य बच्चों की विकास केलिए अत्यंत आवश्यक माना है। इसी कारणवश बालसाहित्य को संवृद्ध किया गया है।

बाल साहित्य परिवार और सामाजिक विषयों को लेकर प्रस्तुत कियाजाता है। जिससे बच्चे अपने जीवन में आए समस्याओं को सामना करने की शक्ति पाए। मूलतः बालसाहित्य का विकास भारतेन्दु हरिश्चंद्र के समय से मान सकते हैं। सोहनलाल द्विवेदी,महादेवी वर्मा, बच्चन,नागार्जुन आदि महान लेखक बालसाहित्य के विकास में योगदान दिए हैं। समकालीन बाल साहित्य में हरीकृष्ण देवसरे ,परशुराम शुक्ल बालसाहित्य को नए पथ में लेके गए हैं। प्रकाश मनु जी के कहानीयां बाल मन को बहलाता है।शंकर बाम जी की इतिहासिक विषयों सरल रूप में प्रस्तुत करते हैं ,जो बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास के साथ-साथ देशभक्ति भाव भी विकसित करते हैं।

प्रकाश मनु की कहानी 'गंगा दादी जिंदबद' दादी और बच्चों के बीच ममता की सुंदर चित्रण हमे देता है। गंगा दादी कमालपुर पुर में तीन पीढ़ियों से रह रही है। उसे गाँव के बच्चों से पड़ता नहीं है । बच्चे चोरी-छुपे दादी की आम की बगीचे में घुस जाते हैं, और बहुत शोर मचाते हैं,जिससे दादी को सिर दर्द होती है। दादी अकेली बगीचे में रहती है। उसका अपना कोई नहीं है। जब भी गाँव वाले उन्हे आम मांगते हैं।दादी प्यार से देती है। एकबार जब दादी अपनी सहेली से मिलने दूसरा गाँव जाती है, बच्चे बगीचे में पहुंचकर खूब केलते हैं। आम तोड़ कर खाते और खूब शोर मचा रखते हैं। जब दादी पहुँच कर देखा तो बच्चों की शोर सुनाई दी उसे बहुत गुस्सा आयी और उसने बच्चों को पकड़ने दौड़ी,बच्चों में सब से छोटा शामू को दादी पकड़ लेती है। उसे रस्सी से बांधने केलिए रस्सी ढूंढते समय शामू भाग जाता है, उसे पकड़ने की कोशिश में दादी गिर जाती है।दादी दर्द से तड़पना बच्चों से देखा नहीं गया तुरंत वैध्य को लेके आते हैं। वैध्य जी दादी को दवाई और मालिश केलिए तेल देते हैं। बच्चे दिन रात एक करके दादी का पूरा खयाल रकते हैं। इससे दादी और बच्चों में प्यार बड़ जाता है। अब बच्चे बगीचे में खेलते हैं, लेकिन दादी उन्हे कुछ नहीं कहती है। कुछ समय बाद दादी चलबसती हैं। तब बच्चे बगीचे का खयाल रखना शुरू करते हैं।

शंकर बाम की 'संसार के वीर बालक' कहानी संग्रह बच्चों के लिए साहस और वीरता के बारे में सुंदर प्रस्तुति है। जो यह कहानीयां पड़ता है,उनका मन देशभक्ति से ओत-प्रोत होता है।'पुत्त की वीरता' भारत की इतिहास में चिरस्मरणीय है। जब अकबर की सेना चित्तौड़ पर आक्रमण किया तो ,राजा उदायसिंह राज्य से निकाल जाते हैं। वीर प्रतापी सेनापति जयमल शहर की रक्षा कर रहे थे। दूर से गोली चलाकर जयमल को अकबर की सेना गिरादी। शहर में हलचल मछगई। सोलह वर्ष का बालक पुत्त देश की रक्षा केलिए मैदान में उतर आया । पुत्त की माँ और बहन उसे वीर तीलक लगाकर उसे देश केलिए लड़ने केलिए बेझते हैं। साथ ही माँ और बहन युद्ध में उसकी साथ देने हतियार लेकर निकालपडे। पुत्त की रक्षा करते बहन वीर मृत्यु प्राप्त की ,माँ गोली खाकर गीरपड़ी । पुत्त माँ को उस स्थिति में देख कर विकल होजाता है। तब माँ पुत्त को कर्तव्य बोध करती है। पुत्त आग बाबुल होजाता है जयमल का लाश खिले से ले आ कर अंतिम संस्करण करने केलिए मुगल सेना पर टूट पड़ता हैं। हजारों मुग़ल सैनिकों को मार देता है। मुर्दान खाँ मुगल सेना के अधिकार पुत्त को ललकारता है। पुत्त बदले में उसको भी मार देता है। अपने प्राणों को दांव पे लगाकर जयमल का लाश खिले से बाहर ले आता है। दूर से मुगल सेना पुत्त पर गोलियों की वार करते हैं। जब उसे गोली लग कर एक तरफ गिर जाता है तब तक पुत्त सेनापति का लाश को अग्नि में पहुँचा देता है। अपना प्रतिज्ञा पूरा करता हैं।

'गंगू दादी जिंदबाद' इस कहानी में गाँव का जीवन मिलता है। दादी ममता की मूर्ति होती है। वह अपने पोते-पोतियों को बहुत प्यार देती हैं। दादी चार पीढ़ी देखि होगी जो अपने बचपन और उनके बच्चों का बचपन और उनके बच्चों की। बच्चे और दादी नानी के बीच बहुत प्यार होता है। दादी जो भी विषय समझाना चाहती है यूं छील्लाकर या प्यार से सिखाती है। प्रस्तु कहानी में दादी बच्चों से गुस्सा करती है , इसका कारण उनकी बर्ताव है। चोरी छुपे बगीचे में गुसना और आम तोड़ना दादी को पसंद नहीं है। जब भी कोई पूछते है तो वह प्यार से देती है। बच्चे खेलेंगे नहीं तो क्या करते? लेकिन वे दादी से पूछ कर भी वहाँ खेल सकते हैं,आम खा सकते हैं। लेकिन बच्चे वैसा नहीं किए है यह बात दादी को अच्छा नहीं लगती थी। बुजुर्ग दोपहर के समय में शांति से सोना पसंद करते हैं। लेकिन उस समय में शोर मचाएं तो उन्हे सिरदर्द आजता हैं। इस एक विषय को छोड़ कर उन्हे बच्चों से प्यार ही ज्यादा होता है। घर में बड़ों का तबीयत ठीक नहीं होने पर बच्चे बहुत व्याकुल हो जाते हैं।जैसे उनके साथी को कुछ हो गया हो। बच्चे अपने माता पिता के साथ उनकी सेवा करना पसंद करते है। बुजुर्ग अपने बच्चों से ज्यादा बच्चों के बच्चों से प्यार पाकर आनंद महसूस करते है। उन केलिए अपने आदत बदलते हैं। कहानी में दादी जब बहुत गुस्सा होती है तब कहती है-"फिर आ गए नासपिटे कहीं के? भागो , नहीं तो पकड़कर रस्सी से बाँध दूँगी ।"[1] यह पता चलता है कि बच्चे बहुत नटखट है। वे जाने अनजाने में खेल कूद में आनंद लेने केलिए दूसरों को दुख पहुँचा रहे है। उन्हे दादी की तबियत की खयाल नहीं। चाहे तो वे अपने

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

घर के आस पास भी खेल सकते हैं। लेकिन आम की बगीचे में कोई डांटने वाले नहीं होंगे; और दादी बूढ़ी होने के कारण उन्हे पकड़ नहीं पाएगी वही उनका सोच हो सकता है। बच्चों को दादी की दर्द का अंदाज नहीं था। अकेली दादी पूरा गाँव के साथ अच्छा व्यवहार करती है, लेकिन बच्चों की शोर- खराबी के कारण उन पर गुस्सा करती है।

दादी की स्वच्छ मन की पता हमे तब चलती है जब कोई उन्हे आम मांगते है, तो दादी कहती है "मेरे गुजार के लिए चाहिए भी कितने।"[2] इस वाक्य से यह पता चलता है कि दादी अकेली रहते हुए बहुत साल हुए है। उनकी अपना कोई नहीं है। वृद्ध अवस्ता में अकेले जीवन जीना वह भी एक औरत केलिए दुख दायक होता है। कभी-कभी अपनों के याद में वे दूसरों के ऊपर गुस्सा दिखा देते हैं। अगर उन्हे सहारा मिले उनका जीवन आनंदमय होजाता है।

जब दादी गिर जाती है,दादी की दर्द देख कर बच्चे कहे,"दादी ,दादी बहुत दर्द हो रहा है? डॉक्टर को लाएँ?"[3] बच्चों की कोमल मन कितना साफ होता है इस वाक्य से स्पष्ट होता है। उनसे दूसरों को दर्द में देखा नहीं जा सकता । जितना भी शोर माचादें लेकिन उन्हे अपना गलती का एहसास होने पर दुखी हो जाते हैं। उन्हे सुधारने की कोशिश करते हैं। परिस्थितियाँ कभी-कभी शत्रु के बीच प्यार उत्पन्न कर देती हैं। कहानी में "हमें मालूम नहीं था , इन दादी -पोतों में इतना प्यार है। "[4] इस वाक्य से यह स्पष्ट होता है।बच्चों की व्यवहार में जो परिवर्तन आया है,इससे बच्चों के माता-पिता और परिवार गाँव वाले भी खुश हुए। बच्चों की सेवा तत्परता और प्यार से सभी प्रसन्न हुए। जब बच्चे अपने गलती सुधारने दादी की पैर छूकर माफी मांगते हैं। दादी की मन द्रवित होती है कहती है"तुम जैसे प्यारे-प्यारे पोते मुझे मिल गए। अब मुझे क्या चाहिए?"[5]

अंततः गंगा दादी कहानी के माध्यम से लेखक बच्चों को बड़ों को अदर करना, गलती सुदारना ,सेवाभाव , मुख्य रूप से जब प्यार से काम करते है तब सबकुच अच्छा ही होता है, आदि के सीख दी है।कहानी में वृद्धों के विवशता पर भी प्रकाश डाला है।बूडे अकेले रहते हैं उनकी आरोग्य समस्या आने पर उनका देख बाल करने कोई नहीं होंगे। यही विषय उन्हे बहुत सताती है। मानसिक वेदना जरूर अंदर ही अंदर उन्हे निगलेती है। अगर उनसे बात करने वाले मिल जाय तो उन्हे बहुत आनंद मिलता हैं। जैसे इस कहानी में बच्चों ने किया है।बच्चों और दादी के बीच प्यार और ममता का एक नया बंधन शुरू हुवा है।

भारत वर्ष के इतिहास में वीरता और देश भक्ति की कमी नहीं है।वीरों की जनम दिए माता भाग्य शाली है। एक शिवाजी,लक्ष्मी भाई,राणा प्रताप, रुद्रम देवी,रत्न सेन,पृथ्वी राज आदि वीर पुत्र और पुत्रियों इस देश को दिए हैं, हमारी वीर मतवों ने। हमारे देश में वीर मतवों की कमी नहीं है। शिवाजी की माँ जीजभाई रामायण ,महाभारत कहानियों द्वारा शिवाजी को नैतिक मूल्य ,देश भक्ति की पाठ पढ़ाई । आगे चलकर शिवाजी महावीर, स्त्रीयों को सम्मान करने वाला, गरीबों की खयाल करने वाला और एक अच्छा नायक बना है। इतिहास के पन्नों मे अपने लिए एक जगह बनाया है।

चरित्र के पुटों में पुत्त एक माहवीर बालक था।पुत्त की चरित्र जानकर बच्चे भी देशभक्त से ओत प्रोत होते हैं। शंकर बाम की यह कहानी सरल और बच्चों को मनोरंजक भी है। इस कहानी में माँ और बहन की देश भक्ति की झलक देखने को मिलती है। जब सेनापति जयमल युद्ध में शाहिद होते है तो पूरा शहर डर जाता है। कोई भी शहरवासी रण भूमी में जाने केलिए तयार नहीं है।शहर की परिस्थिति समाज कर सोलह वर्ष की अपने बेटे को युद्ध भूमी में जाने केलिए पुत्त की माँ और बहन आगे आए है। नारी किसी पुरुष से काम नहीं इसका भी परिचय हमे इस कहानी में मिलती है । पुत्त को युद्ध में जाने केलिए वीरतीलक लगाकर भेजे हैं। और वीरांगना की तरह पुत्त की माँ और बहन भी हतियार लेकर देश केलिए लड़ने रण भूमी पहुँच गए। उनकी वीरता के सामने मुगल सेना हताश हुई। लेकिन मुगल की माह सेना के सामने दो नारी बहुत देर तक डट के युद्ध की और घायल होकर गिर गायें। अपने मृत्यु पर वे रोए नहीं बल्कि वीर मृत्यु को आनंद से स्वीकार लिए है। जीवन के अंतिम क्षणों में भी पुत्त की माँ पुत्त को देश भक्ति की पाठ पढ़ाई –"तू देश का वीर सिपाही है। उसी के लिए सिपाही को मरना और जीना होता है। ... अपनी मातृभूमी पर तेरे जीते-जी किसी तरह की आँच न आने पाए, इसका ध्यान रखना। तुझे इस वीर बहिन और माँ की शपथ है ।"[6]

धन्य है पुत्त और उनका माँ और बहिन जिन्होंने देश केलिए अपना प्रण न्योछावर किए हैं। सोलह वर्ष का बालक जो देश केलिए अपना प्रण देने तैयार होगेय है और शत्रु को यमराज के रूप में दिखने लगा है। उसका साहस ,आत्मनिर्भरता के सामने शरीर पर दिखने वाले घाव कुछ भी नहीं है।पुत्त को मर्दान खाँ ललकारता है ,तब पुत्त कहता है "चित्तौड़ अभी उतना कमजोर नहीं हुआ है। यहाँ से पहला मेरी लाश जाएगी,तभी जयमल की लाश मिल सकती है। लो तैयार हो जाओ लाश की कीमत चुकाने के लिए ।"[7] अतः हमे पुत्त की धैर्य और साहस,देशभक्ति का परिचय मिलता है। बालक के मुह से इतने बड़ी बात उसकी आत्मविश्वास की निदर्शन है। बच्चों की इस साहसी गुण देश केलिए आवश्यक है। समस्या आने पर डरते नहीं समस्या को सुलझ ने में अपना समय व्यतित करते हैं।

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III
SJIF Impact- 5.67

निष्कर्षतः प्रस्तुत दो कहानियों में माँ और दादी के रूप में नारी अपना कर्तव्य पूर्ण रूप से निभाते हैं। वे उनकी रक्षा करने में अपना जीवन समर्पण करते हैं। बहिन और भाई का प्यार माँ और बच्चों के प्यार से काम नहीं है। माँ बच्चों में एकता की भवना जगाती है। बच्चे जब गलत कार्य करते हैं तो माँ के सिवाय उन्हे कौन सुधार सकते हैं।

माँ आसमान प्रेम की मूर्ति, धरित्री जैसी सहनशील ,बच्चों के लिए पहला गुरु भी वही है। नारी की गुणों का वर्णन करते हुए महान व्यक्ति ने कह है –'करयेशू दासी,करनेशू मंत्री ,भोजयेशू माता ,क्षमया धरित्री ' । अतः नारी सरवागुणों का मेल है जो परिवार को खुशी देती है। कितनी भी कठिन परिस्थिति में वह जुगरे,फिर भी वह बच्चों केलिए आनंद देना उसका आनंद मानती है। रोजी की रोटी मिलन मुश्की स्थिति रहने पर वह बच्चों केलिए भीक मांगना बुरा नहीं मानती है। बच्चों को दो वक्त रोटी केलिए वह कांवली बन जाती है, किसी के घर में खानपकाने वाली, किसी के घर में छोटे बच्चों को संबलने वाली।हम मानव बहुत भाग्यशाली हैं,क्यों की जहाँ भगवान सभी की देखबाल खूद करनहीं सकते ,इसलिए उन्होंने सभी का खयाल रखने केलिए माँ को दिए हैं। श्री रामचन्द्र,श्री कृष्ण भी बचपन में अपने मतवों के गोद में लोरी सुनकर ही बड़े हुए है।

आज काल की भागम दौड़ में माँ एक तरफ घर ,परिवार दूसरी तरफ । समाज में अपनी अस्मिता केलिए नारी काम कर रही है। नारी शक्ति की भण्डार है। एक जलती हुई दिया की तरह परिवार केलिए सबकुच करती है । अपने लिए कुछ नहीं सोचती है। बच्चों से ज्यादा माँ केलिए और कोई प्यार नहीं। बच्चे अपने माता और बहिनों को गौरव देना सीखे। आज के बच्चे काल का भविष्य हैं। जब माँ शिक्षित होती है परिवार भी विकास होती है ,आगे बड़ती है। जिस से देश का भविष्य उज्वल होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. प्रकाश मनु 'गंगा दादी जिन्दाबाद' पृ .9
2. प्रकाश मनु 'गंगा दादी जिन्दाबाद' पृ .11
3. प्रकाश मनु 'गंगा दादी जिन्दाबाद' पृ .12
4. प्रकाश मनु 'गंगा दादी जिन्दाबाद' पृ .13
5. प्रकाश मनु 'गंगा दादी जिन्दाबाद' पृ .13
6. शंकर बाम 'संसार के वीर बालक' पृ.34
7. शंकर बाम 'संसार के वीर बालक' पृ.37

Impact Factor : 7.001

ISSN : 2395 - 5104

शब्दार्णव Shabdarnav

International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research

Year-9 Vol.-18, Part-II July-December, 2023

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
DR. KUMAR MRITUNJAY RAKESH
MR. RAGHWENDRA PANDEY

Published by
SAMNVAY FOUNDATION
Mujaffarpur, Bihar

- चंदेलकालीन कला में शिव का स्वरूप — 350–353
  शिवांगी चौबे
- देवप्रश्ने बृहज्जातकोक्तदिशा देववाहनचिन्तनम् — 354–355
  श्रीवत्स अच्युतः
- पुराणों में वर्णित वैक्तिक और सामाजिक आदर्शों की जीवन–प्रबंधन में उपादेयता — 356–359
  स्वेता शर्मा, डॉ० राकेश गिरी व डॉ० सुरेंदर कुमार
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में अभिव्यक्त समाज एवं संस्कृति : एक आलोचनात्मक अध्ययन — 360–363
  श्यामलाल उदेनिया
- कर्मकाण्ड की शास्त्रीय परम्परा में वेदोक्त संस्कारों की उपादेयता — 364–367
  सुरेन्द्र कुमार तिवारी व डॉ० कमलेश कुमार थापक
- भाषासंङ्घटने व्याकरणम् — 368–370
  तिलोत्तमा बेहेरा
- उपनिषद्कालीन शिक्षा (छान्दग्योपनिषद् के आलोक में) — 371–373
  उपेन्द्र कुमार चौधरी
- रसभावाद्याविष्कारः सूतपरम्परागतरङ्गकलासु — 374–375
  वि० श्रीहर्षः
- आधुनिक बाल कहानी साहित्य में प्रकाश मनु का स्थान एवं योगदान — 376–379
  वेंकटा शिल्पा काकि (शिल्पा के०वि०) व डॉ० पूर्णिमा श्रीनिवास
- अभिनवगुप्तस्य तन्त्रालोके सन्धिचर्चा — 380–383
  विशालगौतमः व डॉ० योगेश–शर्मा
- **Idea of Toleration: An Overview** — 384-387
  Akhilesh Yadav
- **A Review on- Ethnopharmacology of Plant Pyracantha Crenulata** — 388-393
  Amaan Khan & Miss. Pooja Negi
- **Uniform Civil Code (UCC): Is Uniformity within Diversity Possible?** — 394-398
  Awnish Murari
- **Theories of Khyāti (theories of error) in Indian Philosophy Bhāratīyadarśane Khyātivāda** — 399-401
  Debdas Biswas
- **The Essance of Dhyanbindu Upanishad** — 402-403
  Dr. Anupama B
- **Contribution of Sanskrit Language to Buddhism: A Comprehensive Exploration** — 404-408
  Bhante Dr. Chandrakitti (Champalal) & Dr. Yeshpal
- **Active Voice & Passive Voice in English** — 409-414
  Dr. (Prof) Husain Abid Rizvi
- **Ayurvedic Aspects in Subhashitas** — 415-416
  Dr. Krishna V. Joshi

Shabdarnav : *An International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research* | **ISSN - 2395-5104**
वर्ष–9, अंक–18, भाग–2, जुलाई–दिसम्बर, 2023 | **Impact Factor : 7.001**

आधुनिक बाल कहानी साहित्य में प्रकाश मनु का स्थान एवं योगदान

वेंकटा शिल्पा काकि (शिल्पा के. वि.)* व डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन**

"साहित्य समाज का दर्पण है"। मानव समाज, संस्कृति, चिंतन प्रक्रिया का विकास, जीवन शैली, मान्यता आदि का ज्ञान साहित्य में प्राप्त होता है। बच्चों के जीवन विकास में परिवार, समाज के साथ-साथ साहित्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। बच्चे अपनी माँ, दादी और नानी की कहानियाँ सुनकर बड़े होते हैं। दादी, नानी और माँ वही कहानियाँ सुनाती आई हैं जिन्हें उन्होंने बचपन में सुना है, अर्थात् 'पंचतंत्र' की कहानियाँ, 'हितोपदेश' की कहानियाँ, लोक कथाएँ, राजा-रानी की कहानियाँ, पुराण, इतिहास आदि। इन कहानियों के जरिए बच्चे कल्पना जगत में उड़ना सीख लेते हैं। उनमें जीवन और समाज के बारे में जानने और सीखने की इच्छा प्रबल हो जाती है।

आज बच्चे समाज में उन्नति के नाम पर हो रहे विज्ञान, समाज, राजनीतिक आदि से प्रभावित विकास का शिकार बन रहे हैं। बदलती परिवारिक परिस्थिति बच्चों की मानसिक स्थिति पर दुष्प्रभाव डाल रही है। वे अपने अंदर कई प्रश्नों के समाधान प्राप्त करना चाहते हैं। बालसाहित्य से मित्रता करने पर बच्चों के जीवन में सकारात्मक गुणों का विकसित होता है। परिणाम स्वरूप देश का भविष्य उज्वल होता है। बचपन में बच्चे कहानी, कविता और गीत के माध्यम से जीवन, समाज, नीति, धर्म आदि से सुपरिचित होते हैं। बच्चों के कोमल मन को अच्छे और सकारात्मक विषयों से भरने से उनमें आत्मविश्वास, धैर्य, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, कल्पना, भाव अभिव्यक्ति, सदाचार, ज्ञान आदि गुण विकसित होते हैं। बाल साहित्य, बाल मनोविज्ञान के अनुकूल होना आवश्यक है। इस दृष्टि में बाल साहित्य का योगदान सराहनीय है।

बाल कहानी के महत्व के बारे में पंचतंत्र के माध्यम से **विष्णु शर्मा** यों कहते है - "यन्नेव भाजने लग्नः संस्कारों नान्यथा भवेत् कथाच्छलेन बलाना नीतिस्तदिह कथ्यते ।।"[1] अर्थात् "जैसे मिट्टी की कच्चे पात्र में बने चित्र, रेखाएँ आदि कलात्मक संस्कार उसके पके जाने पर नहीं मिटते, वैसे ही कोमल बुद्धिवाले बालकों के मन से अनेक कथाओं के बहाने सुनाए गए नीति वचन नहीं मिटते।"[2] यह स्पष्ट है कि मानव चरित्र का निर्माण बचपन में ही विकसित होता है। आज के बच्चे ही कल का भविष्य है। अतः बच्चों को सुसंस्कृत नागरिक बनाना हमारा परम कर्तव्य है, जिनके कंधों पर देश का भविष्य निर्भर है।

बच्चों में सकारात्मक गुणों का विकास करना, उनकी जिज्ञासा तृप्त करना, परिवार के साथ-साथ बालसाहित्य का गंभीर लक्ष्य बनता है। बाल साहित्य के वरिष्ट साहित्यकार सोहनलाल द्विवेदी जी ने बालसाहित्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहते हैं – "सफल बाल साहित्य वही है जिसे सरलता से अपना सकें और भाव ऐसे हों, जो बच्चों के मन को भाएँ।"[3] अर्थात् साहित्यकार बच्चों के स्तर पर उतरकर बच्चों के मन की बात उन्हीं की भाषा में लिखना है। बाल मानोविज्ञान को समझकर उसके अनुकूल रचना करना साधारण कार्य नहीं है।

हिन्दी साहित्य कें प्रारम्भिक काल में मात्र बच्चों के लिए सुनिर्धिष्ठ साहित्य का विकास नहीं हुआं है। बच्चे उपलब्ध साहित्य में अपने रुचि के अनुसार साहित्य से आनंद प्राप्त करते थे। पाश्चात्य साहित्य से प्रेरित आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास क्रम में बालसाहित्य अहम् भूमिका निभाती है। आधुनिक हिन्दी बालसाहित्य का विकास राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, श्रीधर पाठक, सोहनलाल द्विवेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, नरेश त्रिपाठी आदि साहित्यकारों द्वारा विभिन्न विधाओं के माध्यम से हुआ है, यथा कविता, कहानी, नाटक आदि।

भारतेन्दु युग में बाल कहानी साहित्य प्रारम्भिक रूप रेखा ली। इस समय की राचानाओं में मनोरंजन के साथ देशभक्ति प्रधान, संस्कार प्रदान करने वाली, जीवन सुधार की शिक्षा देने वाले रचनाएँ रचे गए हैं। इस समय की पत्र-पत्रिकाओं में शिक्षा और नीतिपरक विषयों पर बल दिया गया है। भरेतेंदु हरिश्चंद्र के 'सत्य हरिश्चंद्र', 'अंधेर नागरी चौपट राजा' बच्चों को प्रेरणा देनेवाले नाटक हैं। राधाकृष्ण का 'महाराणा प्रताप' बच्चों में लोक प्रिय नाटक है।

द्विवेदी युग के समय में बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए पाठ्यक्रम संबंधी पुस्तकों की रचना जोर-शोर से की गया है। खड़ी बोली का साफ-सुथरा रूप सामने लाया गया है। द्विवेदी जी की 'पांडवों का विवाह' कहानी इसका

*शोधार्थी, ID:UP22G9650003, पता: 26, Pearl Citadel, 5th Main Road, Jayachandra Nagar, Medavakkam, Chennai 600100
**शोधनिर्देशिका, Assistant Professor & HOD of Hindi Dept पता : Vels University, Pallavaram, Chennai

सटीक उदाहरण है। इस युग में बाल मनोवृत्ति के अनुकूल जन-जीवन से संबंधी विषयों का ज्ञान प्रदान करना साहित्य का विषय बना है। इस युग की कहानियों में भारतीय धर्म, संस्कृति, परंपरा, त्योहार आदि विषयों को बाल मनोवृत्ती के अनुकूल लिखा गया है। मुंशी प्रेमचंद के 'बड़े भाई साहब', 'जंगल की कहानियाँ', 'दो बैलों की कथा' आदि बच्चों में प्रचलित कहानियाँ हैं। अर्थात् इस समय में बालसाहित्य को उचित दिशा एवं नया आयाम प्राप्त हुआ है। महावीर प्रसाद द्विवेदी, जयशंकर प्रसाद, जहूरबख्श, प्रेमचंद आदि बालसाहित्य में सराहनीय कार्य किए हैं।

आधुनिक युग के भारतीय साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष की भावना प्रबल है। अतः राष्ट्रीयता, नैतिकता, वीरता, धीरता, साहस आदि बालसाहित्य के केन्द्रीय विषय हैं। महान स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन के बारे में बच्चों के लिए प्रेरणादायक रचनाएँ किए गयी हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'हिंगवाला' कहानी आत्मीय भावना को उभर कर लाती है। सोहनलाल द्विवेदी के 'बांसुरी', 'झरना', 'शिशु भारती', 'विगुल' उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, लाली प्रसाद पाण्डेय, माखनलाल चतुर्वेदी आदि उल्लेखनीय साहित्यकार हैं।

स्वतंत्रोत्तर युग में बालसाहित्य का बहुमुखी विकास हुआ है। बालसाहित्य में बालमानोविज्ञान के अनुकूल बच्चों की रुचि, आदत, सामाजिकपरिवेश आदि पर बल दिया गया है। बच्चों को युगीन परिवेश प्रदान करना, मनोरंजन, समाज, जीवन, जासूसी, हास्य, आदि बालसाहित्य के मूल विषय हैं। अमृतलाल नागर की 'साझा', 'अंतरिक्ष सूट में बंदर', 'अमृतलाल नागर बैंक लिमिटेड' आदि उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। इस काल अवधी में रामधारी सिंह 'दिनकर', हरिवंश राय बच्चन, अमृतलाल नागर, विष्णु प्रभाकर, मस्तराम कपूर, भीष्म साहनी, मालती जोशी, भगवती प्रसाद वाजपेयी, सुमित्रा नंदन पंत आदि इस समय के उल्लेखनीय साहित्यकार हैं।

वर्तमान काल बालसाहित्य का स्वर्णिम युग है। बालसाहित्य के विभिन्न विधाओं में गतिशील लेखन हो रहा है, जैसे- कविता, गीत, लोरी, यात्रावृत्तांत आदि। वैज्ञानिक विचारधारा, बालमानोविज्ञान, प्रौद्योगिक-आविष्करण आदि विषय साहित्य की केंद्र बिंदु बने हैं। हरिकृष्ण देवसरे, डॉ.राष्ट्रबंधु, परशुराम शुक्ल, प्रकाश मनु, उषा यादव, दीविक रमेश, सुरेन्द्र विक्रम, दिव्या माथुर, चित्र मुद्गल, क्षमा शर्मा, हरीश कुमार 'अमित', रोचिका अरुण शर्मा आदि उल्लेखनीय साहित्यकार हैं। बालसाहित्य की समीक्षा इस समय में बखूबी की जा रही है।

साहित्यकार हरिकृष्ण देवसरे ने परी, राजा-रानी, जादू-टोना, तिलिस्मी जैसी अतार्किक विषयों पर आधारित साहित्यिक रचनाओं का विरोध करते हुए स्वयं तर्क परख विषयों पर आधारित साहित्यिक रचनाएँ की हैं। परशुराम शुक्ल जी ने पशु, पक्षी, वृक्ष आदि विषयों से संबंधित ज्ञान को अपने साहित्य के माध्यम से प्रदान किया है, जैसे:- 'राष्ट्रीय वृक्ष और राज्य वृक्ष' आदि। इन साहित्यकारों ने बालसाहित्य को नया दृष्टिकोण प्रदान किया है।

वर्तमान बालसाहित्य के क्षेत्र में प्रकाश मनु जी उल्लेखनीय हैं। मनु जी अपने बालसाहित्य के लिए सन् 2010 साहित्य अकादमी के प्रथम 'बालसाहित्य पुरस्कार' से सम्मानित हैं। वे 'नंदन' पत्रिका के संपादक का कार्यभार संभाल कर पदवी निवृत्ति के बाद स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं। मनु जी के कहानी संग्रह 'गंगादादी जिन्दाबाद' और 'अजब-अनोखे विज्ञान कथाएँ' में व्यक्त किया गया मित्रता, आत्मविश्वास, विज्ञान कल्पना विषयों के बारे में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

प्रकाश मनु जी की कहानी संग्रह 'गंगादादी जिन्दाबाद' में मनु जी ने मनोरंजन के साथ ही जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य, देशभक्ति आदि विषयों के बारे में अपने विचार सुंदर और सरल रूप में प्रस्तुत कि हैं, जैसे:- 'रज्जो की सहेली', 'तुम भी पढ़ोगे जस्सु', 'जब चित्र बनाए पैरों ने' आदि।

मित्रता : प्रकाश मनु ने बच्चों को प्रस्तुत कहानी में सच्ची मित्रता और आत्माविश्वास का सुंदर परिचय दिया हैं। 'मित्रता' मनुष्य में व्याप्त स्नेह भाव का अनोखा रूप है। यह मनुष्य का स्वाभाव है। हर व्यक्ति के जीवन में मित्र एवं मित्रता, अभिन्न अंग हैं। सच्चा मित्र जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणादाई स्रोत है। **रामचन्द्र शुक्ल** मित्रों के चुनाव को सचेत कर्म बताते हुए लिखते हैं – "हमे ऐसी ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। मृदुल और पुरुषार्थी हों। शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सके कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।"[4]

प्रकाश मनु 'रज्जो की सहेली' कहानी में इसी का चित्रण 'रज्जो' के माध्यम से किया है। सामान्य बच्चों की तरह रज्जो भी अपने जीवन में मित्र की तलाश में है। जो उसके साथ खेलें, बात करें, दुख-दर्द को समझे और सदा साथ

दें। रज्जो अपनी स्थिति पर दुखी रहती है। रज्जो को अपनी माँ के साथ कामवाली की तरह काम करते समय एक पुरानी किताब मिलती है। जिसमें सुंदर परियों की कहानियाँ हैं। घर जाकर रज्जो पुस्तक पढ़ती है, अपने ज़ीवन में एक परी की उम्मीद करती है। रज्जो के घर के आंगन में परियाँ प्रकट होती हैं; अपना परिचय देती हैं; गरीब परी कहती है – "मैं वो हूँ जो एक बार दोस्ती करती हूँ तो फिर उसे जीवन भर निभाती हूँ।"[5] अर्थात् गरीब परी हर वक्त उसके साथ रहकर उसकी सहायता करेगी। यह विश्वास रज्जो को होता है। वह गरीब परी से दोस्ती करती है और उसकी सहायता से आत्माविश्वास के साथ जीवन में आगे बढ़ती है, आनंद प्राप्त करती है। पस्तुत कहानी में लेखक ने मित्रता और आत्माविश्वास का सजीव चित्रण खींचा है।

यह सच है कि बच्चों के जीवन में मित्रता अहम् भूमिका निभाती है। सच्ची मित्रता के कारण बच्चों में ममता, आदर, सहायता, सहिष्णुता आदि सद्गुणों का विकास होता है। इस कहानी में लेखक ने सच्ची मित्रता एवं आत्माविश्वास के बारे में अपना विचार व्यक्त करते हुए बच्चों को सच्ची मित्रता का अर्थ अनायास प्रस्तुत किया है।

आत्मविश्वास का महत्व: मानव जीवन उतार चढ़ाव का संगम है। आत्मविश्वास नामक गुण से मानव अपने जीवन की विकट परिस्थितियों को सफलता पूर्वक पार कर जीवन में आगे बढ़ता है, जीवन को वापस सही पटरी में लता है। लेखक 'जब चित्र बनाए पारो ने' कहानी में मुख्य पात्र आशुतोष के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास को जगाने का सराहनीय कार्य किया है।

आशुतोष का चित्र प्रदर्शन उसके स्कूल में रखते हैं। हमउमर के बच्चों से आशुतोष का चित्र खींचने का कौशल बेहतर है। सब उसके चित्रों की प्रशंसा करते नहीं थकते। एक दुर्घटना में आशुतोष के हाथों में चोट लगती है। आशुतोष हादसे के बाद कुछ गुमसुम सा, भुझा-भुझा सा रहने लगता है। परिवार, दोस्त और अध्यापक अशुतोष को खुश रखने के प्रयत्न में विफल हो जाते हैं। अशुतोष के चित्रकला के अध्यापक अखबार में 'पैरों से कढ़ाई-बुनाई कर सकती है अंबिका' विज्ञापन देखकर अशुतोष को दिल्ली ले जाते हैं। अंबिका के प्रदर्शन से प्रेरित हो कर आशुतोष अपने मास्टर जी से पूछता है "मास्टरजी, क्या मैं भी ऐसे ही चित्र बना सकता हूँ? बना सकता हूँ न ।"[6] अतः अशुतोष के मन में आत्माविश्वास जागता है। वह साथ ही परिश्रम करता है और सफल होता है।

बच्चे जब किसी दुर्घटना से गुजरते है, तो उससे बाहर निकलकर आना साधारण विषय नहीं है। इस करण वे समाज से अपने आप को दूर रखकर अकेले में रहना पसंद करते हैं। अनजाने में गलत कदम उठाते हैं। ऐसी परीस्थितियों में उन्हें आस्था और सहारा मिल जाए तो बच्चे बुरे विचार से उभरकर बाहर आ जाते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि आत्मविश्वास मानव जीवन का सर्वोत्तम गुण है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक आत्मविश्वास का महत्व के बारे में बच्चों को बताते हैं।

वैज्ञानिककल्पना : मनु जी आधुनिक विज्ञान से प्रेरित साहित्यकार हैं। प्रकाश मनु जी के कहानी संग्रह 'अजब-अनोखी विज्ञान कथाएँ' में विज्ञान और कल्पना का सुंदर समावेश है। इन रचनाओं में भविष्य में उपयोग में आनेवाले यंत्रों की कल्पना की गई है। मनु जी ने इस संग्रह में विज्ञान की सुंदर कल्पना की है, जिसका एक उदाहरण:- 'लो चला पेड़ आकाश में' कहानी है। इस कहानी में यांत्रिक पेड़ की कल्पना की गई है। यह पेड़ के स्वाभाविक गुणों के साथ-साथ, इको फ्रेंडली बेटरी के माध्यम से उड़ने वाले इलेक्ट्रॉनिक वाहन की तरह काम करता है। इस पेड़ के द्वारा लेखक ने प्रदूषण के विरोध में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

कहानी का पात्र सुकान्त भट्टाचार्य उड़ने वाले पेड़ की परिकल्पना करते हैं, जो सच बनकर सामने आ जाता है। सुकान्त के मन में कई प्रश्न उठते हैं। वे पेड़ के अंदर बैठने के लिए बनायी गयी जगह में बैठकर ऑफिस जाते हैं और वापस घर भी आते हैं। पेड़ इतना विकसित तकनीकी ज्ञान से बना हुआ है कि वह जिस व्यक्ति के लिए बनाया गया है उसकी समग्र जानकारी पेड़ के डाटा बेस में निक्षिप्त है। सुकान्त भट्टाचार्य के मन में जगे प्रश्नों के उत्तर में पेड़ कहता है- "घबराइए नहीं मि. सुकान्त, मैं आपको आपके दफ्तर ही ले जाऊँगा, कहीं और नहीं। दिन भर आपका इंतजार करूँगा, ताकि शाम को आपको वापस घर ले जाऊँ। .. और जहाँ तक सवाल इस बात का है कि मैंने आपको पहचाना कैसे, तो इसका जवाब यह है कि मुझे अच्छी तरह आपकी तस्वीर दिखाकर मेरी मैमोरी में 'फीड' कर दी गई थी। फिर भला मैं आपको कैसे न पहचानता?"[7] अतः लेखक ने भविष्य के विज्ञान की कल्पना की है, जो आज से सौ गुना उत्तम, समाज उपयोगी, पर्यावरण को सुरक्षित रखनेवाली है।

निष्कर्ष : आधुनिक बालसाहित्य भंडार में चर्चित विषय का विश्लेषण करना समय की माँग है। मोबाइल, टेलीविजन आदि यांत्रिक उपकरणों द्वारा क्षणिक आनंद में डूब रहे बच्चों को सच्चे आनंद से परिचित कराना; साहित्यवाचन की ओर रुचि प्रेरित करना; यथार्थ जीवन से परिचित कराना; अंधविश्वासों से दूर रखना; बच्चों को सम्पूर्ण संतुलित विकास प्रदान करना आदि आधुनिक बालसाहित्य का उद्देश्य है। जिस प्रकार पौधे को सही पोषण और संरक्षण देने से हमे वांचित फल मिलता है, उसी भाँति बाल कहानी साहित्य के संरक्षण से बच्चों में **वांचित** सकारात्मक परिवर्तन होता है। इस प्रकार बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बालसाहित्य सहायक सिद्ध होता है।

निष्कर्षतः हम यह देखते है कि हिन्दी बाल कहानी साहित्य संवृद्ध है। भारत और अन्य देशों में हिन्दी की शिक्षा के माध्यम से बच्चे बालसाहित्य से परिचत हो रहे हैं। बालकहानी साहित्य इस प्रकार विकास पथ पर अग्रसर है।

ग्रंथ सूचि :

1. प्रकाश मनु (स)गंगादादी जिन्दाबाद प्र-2017 ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली
2. प्रकाश मनु (स)अजब-अनोखी विज्ञान कथाएँ प्र-2022 बुक क्राफ्ट पब्लिशर्स, नयी दिल्ली
3. प्रकाश मनु हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास प्र-2018 प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
4. डॉ.सोनाली निनामा(सिसोदिया) 21वीं सदी का बाल साहित्य वान्या पब्लिकेशंस प्र-2022, कानपुर
5. डॉ. आनंद बक्षी हिन्दी बालसाहित्य का अनुशीलन प्र-2016 आराधना ब्रदर्स ,कानपुर

वेब ग्रंथ सूचि:

1. https://mysanskritsubhashit.wordpress.com/2021/12/24/यन्नवे-भाजने-लग्नः-संस्क/
2. https://www.kooapp.com/koo/arun_gupta48MT1/313390e8-714d-408c-a171-092a65380e25

सन्दर्भ :

1. 21 वि सदी का बाल साहित्य डॉ. सोनाली निनामा पृ.7
2. https://www.kooapp.com/koo/arun_gupta48MT1/313390e8-714d-408c-a171-092a65380e25
3. हिन्दी बाल साहित्य का अनुशीलन डॉ. आनंद बक्षी पृ 13
4. https:// hi.wikipedia.org/wiki/मित्रता
5. 'गंगादादी जिन्दाबाद' प्रकाश मनु पृ. 87
6. 'गंगादादी जिन्दाबाद' प्रकाश मनु पृ. 24
7. अजब-अनोखी विज्ञान कथाएँ प्रकाश मनु पृ.12

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.) द्वारा प्रकाशित

SHODH SAMALOCHAN

शोध-समालोचन (त्रैमासिक)

संस्थापक संपादक
स्व. फतेहचंद

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REREREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्ष-12, अंक-2 | अप्रैल-जून 2025 (भाग-2) | आईएसएसएन : 2348-5639

संपादक
• डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

कार्यकारी संपादक
• डॉ. वर्षा रानी

प्रबंध संपादक
• डॉ. मुकेश 'ऋषिवर्मा'

सह-संपादक
• डॉ. लता एस. पाटिल,
• डॉ. सुलक्षणा अहलावत

सह-संपादक
• डॉ. सुमन रानी

अक्षर संयोजन
• मो. सलीम

कानूनी सलाहाकार
• डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
• अजीत सिहाग, एडवोकेट

सलाहकार सम्पादक मंडल

• डॉ. निशीथ गौड, आगरा
• डॉ. ऊषा रानी, शिमला
• डॉ. गोविन्द सोनी, श्रीगंगानगर
• डॉ. सुषमा रानी, जीन्द
• डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट, श्रीनगर
• डॉ. दीपशिखा, पटियाला
• डॉ. गौतम कुमार साहा, दरभंगा
• श्री राकेश शंकर भारती, युक्रेन
• डॉ. के.के. मल्होत्रा, कैनेडा
• डॉ. आशीष कुमार दीपांकर, मेरठ
• डॉ. कामिनी कौशल, गाजियाबाद
• डॉ. रवि शंकर सिंह, आरा
• डॉ. संजय कुमार, रांची
• डॉ. संतोष कुमार भगत, रांची

1. 'शोध-समालोचन' का प्रबंधन और संपादन पूर्णतः अवैतनिक है।
2. 'शोध-समालोचन' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी है।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्र भिवानी न्यायालय ही मान्य होगा।
4. प्रकाशक/ स्वामी डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से मुद्रित करवाया।

'शोध समालोचन' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है–**बैंक :** PUNJAB NATIONAL BANK **Branch :** Yamuna Vihar, Delhi-110053 **IFSC :** PUNB0225600 **Account Holder :** SANIA PUBLICATION **Current Account No.** 2256002100405546 भुगतान की मूल रसीद, शोध -पत्र पत्रिका की ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

नोट :- इस अंक की प्रिंट कॉपी खरीदने के लिए सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से सम्पर्क करें मो. 9818128487

मूल्य : 650/- रु. एक प्रिंट प्रति — वार्षिक 2500/- रु.

विषयानुक्रमणिका

संपादकीय **6**

शिक्षा और कौशल विकास : युवा पीढ़ी के लिए तैयारी 2047 के संदर्भ में एक अध्ययन 10
दीपा देवी

Contribution of National Education Policy 2020 towards Developed India 2047 14
Dr. Dilip Kumar Parsendiya

DESMIDS FROM JHANSI (UP) INDIA 18
Iqbal Habib

भारत 2047 का डिजिटल समाज : शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल जागरूकता, साक्षरता और साइबर सुरक्षा के संदर्भ में एक अध्ययन 24
ललिता सैनी

2047 का विकसित भारत प्रशासन के कदम व रणनीतियां 29
डॉ. नीतू सिमर

Viksit Bharat @2047: Concept and Challenges 33
Padmja Ranga

Role of Micro Small and Medium Enterprise (MSME) in Indian Economy 39
Dr. Pooja Priya

भारत: 2047: सशक्त भविष्य की दिशा में - चुनौतियां और रणनीतियाँ 45
मोहम्मद इबादुर रहमान खान
डॉ. मौसमी परिहार

सशक्त भारत के बैंकिंग क्षेत्र में राजभाषा का योगदान– चुनौतियां एवं अवसर (हिंदी गृहपत्रिकाओं के विशेष संदर्भ में) 52
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
श्री एम. संजीवी कनी

COOPERATIVE FEDERALISM AND PARADIPLOMACY: ENABLING INDIAN STATES FOR GLOBAL LEADERSHIP BY 2047 58
Shahzeen Shoaib Afsar

भारत 2047: सशक्त भविष्य की दिशा में- चुनौतियाँ, अवसर और रणनीतियाँ 66
डॉ. शारदा कुमारी

भारत 2047 : सशक्त भविष्य की दिशा में -चुनौतियां, अवसर और रणनीतियां (बच्चे और बाल साहित्य के संदर्भ में) 69
वेंकट शिल्पा काकि
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

भारत 2047 : सशक्त भविष्य की दिशा में -चुनौतियां, अवसर और रणनीतियां (बच्चे और बाल साहित्य के संदर्भ में)

वेंकट शिल्पा काकि
(शोधार्थी)
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज
(VISTAS) पल्लावरम, चेन्नई, इंडिया
ईमेल : silpa-kv@gmail.com

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
(शोध निर्देशिका)
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज
(VISTAS) पल्लावरम, चेन्नई, इंडिया
ईमेल : hodhindi@velsuniv.ac.in

भारत हमारा जन्म-भूमि हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से यह सदा आध्यात्मिक और धार्मिक मार्गदर्शन का केंद्र रहा है। काल गति में इस देश ने कई महायुद्ध और गुलामी को देखा है। फिर भी अहिंसा के बल पर गाँधी जी के मार्गदर्शन में पूरा देश एक होकर स्वतंत्रता प्राप्त किया है। स्वतंत्रता आंदोलन जनमानस तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण कार्य किया है साहित्य। सहित्य देश के विकास पथ में सदैव अपनी भूमिका निभाया है।

अतीत का गौरव गान, महावीरों के गुणगान, तत्कालीन देश की दयनीय दशा, स्वर्णिम भविष्य की कल्पना, आदि का परिचय भारतेन्दु मण्डल के साहित्यकारों ने किया हैं। इन्होंने अंग्रेज के शोषण और नवीन देश की कल्पना के द्वारा जनता में स्वतंत्रता की आस्था जागृत किया हैं। द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने इतिहासिक महापुरुषों के नवीन चित्रण के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के दीपक को अत्यंत प्रकाशवान किया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, आदि ने अपने साहित्य के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में हर भारतवासी को भाग लेने की प्रेरणा दिया हैं। देश के विकास में साहित्य का अप्रतिम योगदान हैं। अर्थात् देश की बदलती परिस्थिति का चित्रण हमें साहित्य के माध्यम से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का 'भारत-भारती' और माखनलाल चतुर्वेदी का 'पुष्प की अभिलाषा', सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी', आदि स्वतंत्रता आन्दोलन को तेज किया है। शिवमंगल सुमन, रामनरेश त्रिपाठी, रामधारीसिंह 'दिनकर', राधाचरण गोस्वामी, जयशंकर प्रसाद, बदरीनाथ चौदरी 'प्रेमघन', नाथूराम शर्मा शंकर, गायप्रसाद शुक्ल स्नेही, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय आदि अनेक-अनेक उल्लेखनीय साहित्यकार हैं जिन्होंने देशवासियों में देशप्रेम को जगाया हैं।

देशप्रेम ही नहीं देश का इतिहास, संस्कृति, परंपरा, धर्म, नीति आदि को पीड़ी दर पीड़ी पहुँचाने में साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाया हैं। अतःदेश की उन्नति में साहित्य की गंभीरता का परिचय हमे मिलता हैं।

किसी भी देश का उज्वल भविष्य आज के बच्चों पर निर्भर हैं। यानि आज के बच्चे भावी देश का निर्णायक है। अर्थात् वर्तमान समय के बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न, सक्रिय, कल्पनाशील, संवेदनशील, देशप्रेमी, नीतिवान, संस्कारवान, आदि बनाना आवश्यक है। इस कार्य में माता-पिता के साथ बाल साहित्य का भी अहम भूमिका है। इस विषय की गवेषणा से यह स्पष्ट होता है कि जो साहित्य बालकों के लिए लिखा जाता है, वह बाल साहित्य है। यह साहित्य मूल रूप से बच्चों से जुड़ी है, परंतु यह ऐसा साहित्य है जो देश और समाज के भविष्य रूप को निर्धारित एवं निश्चय करता है।

बाल साहित्य के बारे में डॉ. सुरेन्द्र विक्रम और जवाहर 'इंदु' ने अपना विचार व्यक्त किया हैं कि "बाल मानोविज्ञान बाल साहित्य लेखन की कसौटी है। बाल मानोविज्ञान का अध्ययन किए बिना कोई भी रचनाकार स्वस्थ एवं सार्थक बाल साहित्य का सृजन नहीं कर सकता है। यह बिल्कुल निर्विवाद सत्य है कि बच्चों के लिए लिखना सबके वश की बात नहीं है। बच्चों का साहित्य लेखन के लिए रचनाकार को स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यह स्थिति तो बिल्कुल परकाया प्रवेश वाली है।"

बाल जगत प्रौढ़ से भिन्न और अनुपम होता है, वे उनके सामने उपस्थित हर वस्तु या घटना को जानने के लिए उत्सुक होते हैं। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्पष्ट किया कि 'बाह्य वातावरण के जीवन से शिशु प्रभावित होकर अपने स्वभाव में परिवर्तन पाता है।' बालमानस कोमल, चंचल, जिज्ञासु और निर्मल होता है। बच्चों को संस्कारयुक्त बनाना चाहिए; सद्गुण विकसी करना चाहिए; मानवीय मूल्य सिखाना चाहिए; यथार्थ जीवन से परिचय कराना चाहिए; उनमें अच्छे कार्य करने की गुण पनपना चाहिए। अतः बच्चों का सर्वांगीण विकास के लिए साहित्यकारों द्वारा ऐसा साहित्य लेखन की जरूरी है, जो उन्हें मनोरंजन, ज्ञान, नीति, जिज्ञासा की तृप्ति, सामाजिक जीवन से परिचय, आदि की शिक्षा प्रदान करने वाली हो। यह आसान कार्य नहीं है। सहित्यकार को सरल भाषा, बाल मनो रुचि, उनकी इच्छा, कल्पना, समस्या आदि को ध्यान में लेते हुए उन्ही के शब्दों में साहित्य की रचना करना अनिवार्य है।

अगर हम पाश्चात्य बाल साहित्य की ओर दृष्टिगोचर करें तो यह स्पष्ट होता है कि वे बाल मनोभावनाओं और विचारों को महत्व नहीं देते हैं। जैसे- जर्मन बाल साहित्य बच्चों को सिपाही बनने, युद्ध करने को प्रेरणा देता है। बच्चों के स्वाभाविक विकास पर फ़्रांस का बाल साहित्य जोर देता है। परंतु भारतीय साहित्य एक ही विचारधारा पर तुले नहीं है। इस प्रकार बाल साहित्य बालकों के सम्पूर्ण विकास में अपना सम्पूर्ण योगदान प्रदान करता है।

हिन्दी साहित्य में बाल साहित्य, अपना पंख फैलाकर भारतेन्दु युग से वर्तमान युगतक विभिन्न प्रकारों में समृद्ध हुआ हैं। यथा कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, जीवनी, एकांकी, आदि।

हिन्दी बाल साहित्य के उद्भव की मूल प्रेरणा संस्कृत साहित्य जैसे- पंचतंत्र, कथासरित सागर, जातक कथा हैं। क्रमशः उसके विकास की प्रेरणा आधुनिक युग में पाश्चात्य बाल साहित्य है। आधुनिक युग में बाल सखा, बाल भारती, नंदन, पराग, आदि कई बाल पत्रिकाएं पल्लवित और पुष्पित हुई हैं।

बाल कहानी सदियों से मौखिक रूप में विद्यमान हैं। बाल कहानी बाल मन के निकट पहुंचकर उनपर गहरा प्रभाव डालता है। इसी कारणवश आज भी कहानी प्रथा विद्यमान है। कहानी में कई प्रकार है। जैसे- ऐतिहासिक, पौराणिक, वैज्ञानिक, हास्य,व्यंग्य, फांतासी, परी, आदि। बच्चों को मनोरंजन और कल्पना जगत में विहार कराता है परी कहानियाँ। यह बच्चों में कल्पना शक्ति को जागृत करता है। साथ ही उन्हें विभिन्न मूल्यों की सिख प्रदान करती है। पाश्चात्य संस्कृति, यंत्रीकरण, आदि बच्चों के जीवन पर बड़ी प्रभाव डाल रहा है। परिणामवश मूल्य हमारे जीवन शैली से घट रहे हैं। अतः वर्तमान समय में मूल्यपरक कहानियों की अत्यंत आवश्यकता है।अर्थात् जिन आचरणों से हमारा जीवन प्रतिष्ठित होता है, जिन्हें हम जीकर प्रतिस्थापित करते हैं, जो ज्ञानपर आधारित अचरणात्मक तत्वों का समाहार है, उन्ही को मूल्य कहते हैं। वर्तमान समय के वरिष्ट बाल साहित्यकार प्रकाश मनुजी, परी कहानियों के माध्यम से यह कार्य सम्पन्न कर रहे हैं।

परी कहानियों के बारे में डॉ. सुरेन्द्र विक्रम कहते हैं 'बदलते हुए समय में परीकथाएं उतनी प्रासंगिक भले ही नहीं रह गई हैं, परंतु उनको अगर नई सोच, नयी संवेदना और कल्पना का पुट डालकर प्रस्तुत किया जाए तो बच्चों को अच्छी मानसिक खुराक मिल सकती है। अगर बच्चों को अच्छी खुराक साहित्य प्रदान करता है तो स्वाभाविक है कि उसकी गणना बाल साहित्य में की जानी चाहिए।' इस दृष्टि में आनेवाली चुनौतियों तथा समाधानों के बारे में प्रकाश डालने का लघु प्रयास इस लेक के माध्यम से किया गया है।

परिश्रम और हिम्मत

आज एकाकी परिवार की प्रथा के कारण बच्चे कई समस्याओं से गुजर रहे हैं। माँ और पिता अपने कार्यक्रमों में व्यस्त होने के कारण बच्चों के साथ समय बिताने और मृदुभाषन करने के लिए किसी के पास वक्त नहीं मिल रहा है। इसी विषय को प्रकाश मनु जी 'होमवर्क का चक्कर' कहानी में दर्शाया है। कहानी का मुख्य पात्र निक्का के माता- पिता दोनों नौकरीपेशे है। परिणामवश निक्का को पढ़ाई में मदद करने के लिए कोई नहीं होते है। निक्का होमवर्क किए बिना अपन समय टी. वी., कैरम, लूडो आदि में व्यतीत करता है। टीचर की डाँट से बचने के लिए होमवर्क पूरी करने की सोच में डूबा निक्का को एक आवाज सुनाई देता है कि "करना क्या है, मेहनत करो" निक्का आश्चर्य से देखा तो परी लोक से आया एक बौना नजर आता है। बौना कहता है -"तुम शुरू ही नहीं करते। शूर करो, तो दुनिया का कोई ऐसा सवाल नहीं, जो निकल न सके।" इस प्रकार बौना निक्का को मदद करता है।

परिणाम स्वरूप वह टीचर से शाबासी पता है—"शाबाश! तुम तो बहुत अच्छे लड़के हो।" निक्का का होसला बढ़ता है। बौने की सहायता के लिए निक्का धन्यवाद कहता हैं। और बौने ने निक्का से सहायता की जरूर के बारे में पूछने पर निक्का कहता है कि 'उसके साथ बात करने और खेलने के लिए आए।' इस प्रकार प्रकाश मनु जी इस छोटी सी कहानी के मध्ययम से बच्चों को मेहनत का महत्व और आत्मविश्वास की आवश्यकता के बारे में भी बताया है।

इसी प्रकार 'मुझे कुछ नहीं चाहिए' कहानी की मुख्य पात्र गोलकी और भाग्य परी के माध्यम से हिम्मत की महत्व के बारे में बताया। गोलकी बिना माँ- बाप के अकेली, अपनी प्यारी बकरी के साथ एक झोंपड़ी में रहती है। वह घर-घर काम करके अपना गुजरा करती है। भाग्य परी उसे वरदान देने के लिए तैयार होती है। परंतु गोलकी बताती है कि उसे काम करने में कोई कठिनाई नहीं है; इससे गुस्से में आकर भाग्य परी गोलकी को सबक सिखाने के चक्कर में अपनी जादू से गोलकी की बकरी को बीमार करती है। इसी कारणवश बकरी मर जाती है। गोलकी का घर गिराती है; गोलकी बीमार पड़ जाती है। ऐसी स्थिति में भी गोलकी अपना वचन पर अडिग रहती है। गोलकी आप में सोचती है—"माँ, तू तो कहती थी, गोलकी कभी हिम्मत न हारना। हमेशा मेहनत की रूखी-सुखी खाना, पर लालच न करना। किसी से माँगना भी मत। तो अब क्या करूँ?" तभी उसे माँ की आवाज सुनाई दी। माँ कह रही थी-"चिंता न कर बेटी घर में रोटी न हो, तो सूखे चने पानी के साथ फाँक लेना। फिर बुखार उतर जाए तो काम पर चली जाना। रमिया काकि को बता देना। वे हमदर्द हैं, कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगी।" गोलकी और उसकी माँ के साथ हुई संवाद से भाग्यपरी की घमण्ड टूट जाती है। अपने जादू से गोलकी को सबकुछ वापस करके उसे धन्यवाद कहने के साथ-साथ वह कहती है—"मैं समझ गई कि धरती पर ऐसे मेहनती लोग भी हैं जिन्हें मेरे वरदान की कोई जरूरत नहीं है। जो सच्चे और मेहनती लोग हैं, भला उन्हें आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है?" इस प्रकार मनु जी जीवन में मेहनत और हिम्मत की अनिवार्यता को सरल भाषा शैली का प्रयोग करते हुए प्रस्तुत किए है। यह कहानी इतनी संवेदनशील है कि बच्चों के मन में अपना स्थान बना लेती है।

अपने कौशल को पहचानिए

हमें अपना कौशल को पहचानना है। अर्थात् हमे स्वयं को सम्मान करना चाहिए। जो खूबियत हम में है इससे प्रसन्न होना चाहिए। यदि हम अपनी खूबियत को छोड़कर सिर्फ अपनी कमियों की तरफ ध्यान देंगे तो हम अपने आप पर हीन भावना से ग्रस्त हो जएंगे।

प्रकाश मनु जी की 'निक्का और तितली' कहानी इसी विषय को स्पष्ट करती है।कहानी का मुख्य पात्र तितली जो पार्क में निक्का के साथ खेलते हुए उससे दोस्ती करती है। निक्का तितली की सुंदर पंख देख कर बहुत खुश होता है। परंतु एक बार निक्का तितली को गाना गाने के लिए पूछने पर तितली, गाना गाने की कौशल उस में नहीं होने के कारण दुखी हो जाती है। निक्का द्वारा तितली की होसला बढ़ाने की कोशिश से तितली और दुखित हो कर वह आसमान बाबा के पास

पहुँच कर अपनी इस कमी की शिकायत करती है। तब आसमान बाबा कहते हैं कि "देखो भाई, सबको सब चीजें तो नहीं दी जा सकती हैं। तुम्हें हमने कितने खूबसूरत रंग दिए हैं, यह तो देखो न। ऐसे रंग भला किसके पास हैं।" इस प्रकार तितली अपनी खूबियत जानकार भी गाने की कुशलता उसमें नहीं होने के कारण बहुत कुढ़ जाती है। तितली की दुख से प्रेरित बाबा, उससे रंग लेकर गाने की कौशल देते हैं। रंगविहीन तितली निक्का के पास पहुँच कर गाना गाने के लिए तैयार होती है। परंतु बिना रंगों वाली तितली को देख कर निक्का उदास होकर कहा-"प्यारी तितली, मैं तो तुम्हें पहचाना ही नहीं....मुझे तो तुम पहले ही जैसे रंग-बिरंगे रूप में अच्छी लगती हो, भले तुम गाना न गाओ। तुम्हारे रंग क्या किसी गाने से कम हैं।" तितली अपनी खूबियत को समझ ती है और अपनी गलती सुधार लेती हैं। इस प्रकार मनु जी इस कहानी के द्वारा अपनी स्वाभाविक कौशल से खुश हो ने की शिक्षा बच्चों को देते हैं।

देश की विकास यात्रा में बच्चों को बाल साहित्य जैसा साथी मिलने पर उक्त यात्रा सुगम हिती है। उन्हें सही-गलत, अच्छाई-बुराई, न्याय-अन्याय, उचित-अनुचित, आदि को तराशने की क्षमता प्राप्त होती हैं। उनका सर्वांगीण विकास होता है। गाँधी जी मानते हैं 'ग्राम ही देश का जड़ है' वैसे 'बच्चे ही देश का भविष्य कहना गलत नहीं है।' उनका विकास देश का विकास है। उन्हे बाल साहित्य की सहायता से सक्षम और दक्ष बनाना हमारा चरम कर्तव्य है ताकि वे उत्तम व्यक्ति बनकर देश की उन्नति, प्रगति और विकास में अपना सम्पूर्ण योगदान प्रदान करें।

मूल ग्रंथ

1. डॉ. आनंद बक्षी, हिन्दी बाल साहित्य का अनुशीलन, 2016, कानपुर
2. किस्सा एक मोटी परी का, प्रकाश मनु
3. अजब-अनोखी परीकथाएँ, प्रकाश मनु

वेब आलेख सूचि

1. https://hindi.webdunia.com/independence-day-special/contribution-of-poets-poets-and-writers-in-freedom-struggle-121081200041_1.html
2. https://uou.ac.in/sites/default/files/slm/FHVA-(A)10.pdf
3. https://www.storyboardthat.com/genres/fairy-tales

सन्दर्भ

1. डॉ. आनंद बक्षी, हिन्दी बाल साहित्य का अनुशीलन, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, 2016, पृ.सं.13
2. प्रकाश मनु, किस्सा एक मोटी परी का, ग्रंथ अकादेमी, नई दिल्ली, 2018, पृ.सं.14
3. प्रकाश मनु, किस्सा एक मोटी परी का, ग्रंथ अकादेमी, नई दिल्ली, 2018, पृ.सं.15
4. प्रकाश मनु, अजब-अनोखी परीकथाएँ, ट्राइडेंट पुब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2023, पृ.सं.13
5. प्रकाश मनु, अजब-अनोखी परीकथाएँ, ट्राइडेंट पुब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2023, पृ.सं.14
6. प्रकाश मनु, किस्सा एक मोटी परी का, ग्रंथ अकादेमी, नई दिल्ली, 2018, पृ.सं.9
7. प्रकाश मनु, किस्सा एक मोटी परी का, ग्रंथ अकादेमी, नई दिल्ली, 2018, पृ.सं.9

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
अक्टूबर 2024
Vol.-20, Issue-4
Impact Factor 7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

15.	स्वामी विवेकानंद के विचारों में समग्र शिक्षा की प्रासंगिकता	ज्योत्सना भट्ट मोहित कुमार शर्मा	81-85
16.	इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में नारी की विकासशील विचारधारा	पिट्टा राजकुमार	86-89
17.	संगीत में संतों एवं भक्त कवियों का योगदान	नेहा	90-93
18.	Reviving Tradition: Teejan Bai's Impact on Pandavani	Rakesh Ojha	94-96
19.	राष्ट्रीय आंदोलन में रोहिलखंड परिक्षेत्र से क्रांतिकारियों की भूमिका का : एक अध्ययन	Vishal Kumar Dr Rajat Gangwar	97-99
20.	भारत–नेपाल के सामाजिक और आर्थिक संबंधों का इतिहास	मोहित कुमार शर्मा ज्योत्सना भट्ट	100-103
21.	भारत में भीड़ जनित हिंसा एवम भीड़ द्वारा हत्याः एक समकालीन सामाजिक विधिक समस्या	अतुल कुमार सिंह	104-106
22.	साइबर खतरा "फेसबुक" : मनोरंजक लेकिन बेहद खतरनाक	डॉ0 सुभाष चंद्र मौर्य	107-110
23.	समकालीन आलोचना में विचारधारा और विमर्श	दीपिका चौधरी	111-115
24.	हिंदी और तेलुगू कविताओं में दलित चेतना के सन्दर्भ	गुंडिगी सुधाकर	116-119
25.	रोचिका अरुण शर्मा की बाल कहानियों में चित्रित बच्चों का स्वभाव	वेंकट शिल्पा.काकि डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	120-124
26.	देवेश ठाकुर के उपन्यासों में वेश्या जीवन : एक त्रासद अभिव्यक्ति	देवराम	125-128
27.	गेय संवाद में हिन्दी फिल्म "हीर रांझा" (१९७०)	अरविंद कुमार सोनी डॉ. सुजीत कुमार सिंह	129-133
28.	प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान :- एक क्रमबद्ध	राजन कुमार	134-138

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor:7.523 October 2024 Page No. : 120-124
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

रोचिका अरुण शर्मा की बाल कहानियों में चित्रित बच्चों का स्वभाव

वेंकट शिल्पा. काकि शोधार्थी ID: UP22G9650003
शोधनिर्देशिका **डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन** आसिस्टेंट प्रोफेसर और विभाग प्रमुख, हिन्दी विभाग
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (विस्टास) पल्लावरम, चेन्नई, भारत.

प्रस्तुत आलेख में वर्तमान डिजिटलयुग का परिचय कराते हुए, बालसाहित्य की आवश्यकता के बारे में प्रकाश डाला गया है। वर्तमान समय के बाल साहित्यकारों में नवीन युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि साहित्यकार 'रोचिका अरुण शर्मा' जी की परिचय कराते हुए, इनकी बाल कहानियों का विवेचन किया गया है। खेल-खेल में वैज्ञानिक विषयों को समझाने में रोचिका जी माहिर है। इस आलेख में इनकी कहानियों में व्यक्त अभिमान, चिढ़ाना, पर्यावरण चिंतन जैसी विषयों की जानकारी देने का लघु प्रयास किया गया है। इस दौरान 'किताबों से बातें' कहानी संग्रह की कहानियों को लिया गया है।

बीजशब्द: बालसाहित्य, रोचिका अरुण शर्मा, अभिमान, चिढ़ाना, कुढ़ाना व अप्रसन्न करना,परोपकार, पर्यावरण.

प्रस्ताव:

साहित्य समाज का हित के लिए लिखा जाता है। साहित्य में सदियों से मानव जीवन के उतार-चढ़ाव और विकास के बारे में समग्र ज्ञान उपलब्द होता है। साहित्यकार इस ओर समाज व पाठकवर्ग को प्रेरित करने में सतत प्रयत्नशील हैं। इस दृष्टि से देखाजाए तो साहित्य का अभिन्न अंग बालसाहित्य, बच्चों की उन्नति की ओर प्रेरणास्त्रोत की भूमिका निभाती हैं।

इस जड़वत यांत्रिक युग में मानव जीवन को आराम दायक बनाने के लिए विभिन्न उपकरणों और साधनों का आविष्कार सतत हो रहे हैं। इंटरनेट के करण आज विभिन्न क्षेत्रों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना आसान हो गया है। पहले जमाने में माँ, दादी, नानी, गुरु, आदि ज्ञान प्राप्ति के प्रथम एवं प्रत्यक्ष स्त्रोत रहे। वे अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर अपने बच्चों और शिष्यों को ज्ञान प्रदान करते हैं। जो बच्चों की सकारात्मक विकास को प्रेरित करने में अहम भूमिका निभाती है। आज विभिन्न माध्यमों द्वारा प्राप्त ज्ञान की प्रामाणिकता संदिग्ध है।अतः उक्त ज्ञान बच्चों के हित में है या नहीं इसका निर्धारण करना एवं तराशना कठिन है। इंटरनेट से प्राप्त अति एवं अवांछित जानकारियों के प्रयोग से आजकल के बच्चे जाने-अनजाने में विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे हैं। बच्चों के समस्याओं का समाधान प्रदान करने की क्षमता बालसाहित्य में है।

बालसाहित्य:

हिन्दी साहित्य के विकास में आधुनिक काल महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इस आधुनिक काल में बालसाहित्य विशाल और अटल रूप लिया है। भारतेन्दु युग में विशेष रूप से बच्चों को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना शुरू हुई है। 'बाल' और 'साहित्य' शब्दों के मेल से 'बालसाहित्य' शब्द उत्पन्न हुआ है। बालसाहित्य आधुनिक काल के आरंभ से वर्तमान समय तक विभिन्न चिंतन,दृष्टिकोणों के द्वारा विभिन्न विधाओं में विकसित हुआ है। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य आलोचक डॉ नगेन्द्र बच्चों की आवश्यकताओं में बालसाहित्य का विशिष्ट स्थान माना है। उनकी दृष्टि में -"पहले समाज में बालक का अस्तित्व खिलौनों के रूप में था, उसको प्यार और दुलार तो मिलता था लेकिन उसे समाज का एक अभिन्न अंग नहीं समझा जाता था। लेकिन आज के बालक का नागरिक माना जाता है और बालक की आवश्यकताओं में एक आवश्यकता अच्छे बालसाहित्य की भी है।"[1]अर्थात् बालसाहित्य बच्चों की आंतरिक और बाह्य विकास में अनिवार्य है।

जिस प्रकार बीज बोते समय उससे आनेवाला महावृक्ष की कल्पना की जाती है, उसी प्रकार बालसाहित्य की रचना करते समय बच्चों एवं देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की कल्पना की जाती है। बालसाहित्य के बारे में बालसाहित्य के शीर्षस्थ कवि सोहनलाल द्विवेदी जी के मतानुसार- "सफल बालसाहित्य वही जिसे बच्चे सरलता से अपना सकें और भाव ऐसे हों, जो बच्चों के मन को भाएं। यों तो अनेक साहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहते हैं किन्तु सचमुच जो बालकों के मन की बात बालकों की भाषा में लिख दे वही सफल बालसाहित्य लेखक है ।"[2] हमे यह समझना जरूरी है कि बच्चों को खिलौनों के अलावा और कुछ चाहिए। वे अपने आस-पास के परिवार, परिवेश और समाज को जानना परखना चाहते हैं। बच्चों की इस कौतूहल को शांत करने की क्षमता बालसाहित्य में है। सीधे शब्दों में बालसाहित्य यथार्थ और कल्पना की सम्मिश्रण है। पाठ्य पुस्तकों में बच्चों की जिज्ञासा पूर्ति का अभाव है उसकी भरपाई बालसाहित्य द्वारा होता है। बच्चों में अच्छे संस्कारों का विकास, जीवन में एक निश्चित दृष्टिकोण, समाज के प्रति उत्तरदायित्व, आदि सकारात्मक गुणों का विकास में बालसाहित्य महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। आधुनिक युग में इस मुद्दे की ओर विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी लेखिनी चलाई हैं। इस दृष्टि में हरिकृष्ण देवसरे, परशुराम शुक्ल, जहूरभक्ष, प्रेमचंद, सुभद्राकुमारी चौहन, अमृतलाल नागर, सोहनलाल द्विवेदी, शकुंतला सिरोठिया, राष्ट्रबंधु, श्री प्रसाद, जयप्रकाश भारती, चित्रा मुद्गल, दीविक रमेश, सुरेन्द्र विक्रम, उषा यादव, प्रकाश मनु, क्षमा शर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

रोचिका अरुण शर्मा -एक सामान्य परिचय :

समकालीन युग में बच्चों को समयोचित ज्ञान और विज्ञान का सही मिश्रण अपने रचनाओं के द्वारा प्रदान कर रही है बालसाहित्यकार 'रोचिका अरुण शर्मा'। नवीन पीढ़ी के प्रतिनिधि युवा साहित्यकार रोचिका अरुण शर्मा ने कोटा से अपनी पढ़ाई पूरी की। मानव जीवन के कई भावनावों को बाल मानोविज्ञान के धरातल पर समझाने में रोचिका जी विदूषी है। वे विभिन्न हिन्दी प्रचार संस्थाओं से जुड़ कर हिन्दी प्रचार में कार्यरत है। रोचिका जी सफल कवयित्री, कहानीकार, संपादक, संचालक और अनुवादक है।

रचना काल: हिन्दी साहित्य जगत में रोचिका जी 21 वीं सदी में आपका पदार्पण हुआ। 'एक घूंट चाय' इनकी प्रथम रचना है।

भाषा शैली: रोचिका जी अपनी रचनाओं में बाल सुलभ, सरल और सामान्य शब्द व भाषा शैली का प्रयोग करती हैं। गंभीर विषय को भी बालानुकूल शैली में प्रस्तुत करने में वे विदूषी है। शुद्ध हिन्दी के साथ बोलचाल के शब्दों का प्रयोग, संदर्भ अनुकूल वाक्यांश का प्रयोग करने में वे निपुण है। कथा विषय और पात्र दैनिक जीवन से रूबरू करते हैं। सीधे, सरल और स्पष्ट शब्दों में अपनी विचारों को प्रस्तुत करना उनकी खासियत है।

रचनाएँ:

कहानी संग्रह: जो रंग दे वो रंगरेज, हार्ट इमोजी की धड़कन.

बाल कहानी संग्रह: सिद्धू बनगया जादूगर, किताबों से बाते, मेरे दोस्त मेरे साथ.

बालकविता: एक शहर बच्चों का होता

इसके साथ ही विभिन्न किताबों का सम्पादन, अनुवाद किए हैं। अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

सम्मान:

अपनी रचनाओं के लिए विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा इन्हें नवाजा गया है। जैसे-पंडित जवाहर लाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी द्वारा 'बाल साहित्य सृजक' सम्मान। साथ ही विभिन्न कविता,कहानी और निबंध प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

किताबों से बातें कहानी संग्रह :

'किताबों से बातें' कहानी संग्रह में कुल पंद्रह कहानियाँ हैं। जैसे: क्रिया-प्रतिक्रिया, गर्मी के हँसगुल्ले, दाग भी आच्छे लगते हैं, आदि। इन कहानियों में मनोरंजन, पर्यावरण चिंतन, नैतिक मूल्य, बाल मानोविज्ञान, व्यवहारकुशलता आदि पर उन्होंने प्रकाश डाला है।

अभिमानीरुख:

वर्तमान काल में ज्यादातर बच्चे स्वार्थी बने हैं। सिर्फ अपनी खुशी और आनंद को प्रमुख्यता दे रहे हैं। अपनी संपन्नता को दिखाकर औरों के अभाव का मजाक उड़ाते हैं। यह गुण बच्चों की उज्ज्वल भविष्य में बाधा उत्पन्न करता है। इसे अवश्य सुधारना चाहिए। मित्रता की खूबियत और परोपकार गुण बच्चों की उन्नति के लिए आवश्यक है। इन्हीं गुणों का पुष्टीकरण 'दाग भी अच्छे लगते हैं' और 'चुन्नू खरगोश और गन्नू चूहा' कहानियों द्वारा लेखिका ने उल्लेख किया है।

'दाग भी अच्छे लगते हैं' कहानी में मुख्य पात्र गुल्लू जो अभिमानी है अपने आप पर नाज करता है। वह वर्षाकाल में बारिश के बाद अपना नया लाल साइकिल ले कर सड़क पर सवार हो जाता है।

सड़क पर गंदा पानी के गड्डों के ऊपर से साइकिल इस प्रकार चलता कि गड्डे का गंदा पानी उछलकर पास खेल रहे बच्चों पर छिड़के। इस प्रकार कई बार करने से गुल्लू के दोस्त चिढ़ जाते हैं। बच्चों ने गुल्लू को समझाते हुए कहे-"देखो गुल्लू तुम इस तरह बारिश का गंदा पानी हम पर न उछालो .... हमारे कपड़े गंदे हो जाते हैं और यह गंदा पानी शरीर पर लगने से फोड़े-फासियाँ भी हो जाते हैं।"[3] इस प्रकार गुल्लू के माध्यम से लेखिका बच्चों में दूसरों को अप्रसन्न करने की स्वभाव को दर्शाया है। पर इसका कदर न करते हुए गुल्लू दोस्तों को कुढ़ाते हुए कहता है-"दाग भी अच्छे लगते हैं।"[4] इससे दोस्तों को भड़काता है। परिणामस्वरूप वे अपने मित्र का व्यवहार में परिवर्तन लाने केलिए ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहते हैं। वे लाल दावा में स्टेशनरी का गोंद मिला कर साइकिल पर लगा देते हैं।इस वजह से गुल्लू के हाथों और पैंट पर लगा लाल रंग देखकर गुल्लू के दोस्त उसका खिल्ली उड़ाते हैं। गुल्लू की माँ से गुल्लू को सबक सिखाने के पीछे छिपी कहानी का जानकारी देते हुए उनके मित्र कहते हैं- "माफ कीजिये आँटी आपको हमारी वजह से परेशानी होगी, उसकी पैंट के दाग साफ करने पड़ेंगे।"[5] यथा गुल्लू के दोस्त दोस्ती का उत्कृष्ट मिसाल बन कर अपनी ईमानदारी का परिचय देते हैं।माँ की हिदायत से गुल्लू अपने व्यवहार में सुधार लाता है। रोचिका जी आजकल के बच्चों के स्वभाव और व्यवहार का सुंदर प्रस्तुतीकरण इस कहानी में किया है।

ऐसी ही पात्र का चित्रण हमें 'चुन्नू खरगोश और गन्नू चूहा' कहानी में मुख्य पात्र चुन्नू खरगोश के द्वारा प्राप्त होता है।

परोपकार:

बच्चों में परोपकारी भावना जागृत करने की प्रयास 'चुन्नु खरगोश और गन्नु चूहा' कहानी में लेखिका मुख्य पात्र गन्नू चूहा के माध्यम से किया है।

जंगल में चुन्नु खरगोश अपनी सुंदरता पर गर्व करते हुए दूसरों को नीचा दिखाने में आनंद लेती है। इस स्वभाव के कारण वह गन्नू चूहा को बदसूरत कहते हुए बहुत कुढ़ता है। जैसे की "सभी बच्चे मुझसे खेलना भी पसंद करते हैं और तुम! अपने आप को देखो कितने छोटे से, और इतनी लम्बी पूँछ और ऊपर से तुम्हारा काला भूरा रंग! छीः तुम कितने भद्दे दिखते हो।"[6] इस स्वभाव से सुधार लाने के लिए मित्रता और एकता का पालन करने वाले जंगल का प्रत्येक जानवर का सुबोध निष्फल हो जाता है। एक दिन जंगल में शिकारी आता है और चुन्नू शिकारी का शिकार बन जाता है। उसी रास्ते से आ रहा गन्नू चूहा, अभिमान के कारण सदा उसे चिढ़ाया चुन्नू खरगोश को शिकारी का जाल में छोड़े बिना एकता और मित्रता के कारण बचाती है। गन्नू चूहा के माध्यम से लेखिका ने जरूरतमंद को सहायता करने की पाठ बच्चों को पढ़ाई है। गन्नू की अच्छे गुणों से प्रेरित हो कर चुन्नू जंगल के सभी जानवरों के सामने अपनी गलती की माफी माँगती है और गन्नू से मित्रता करती है।

पर्यावरण:

बच्चें पर्यावरण के बारे में ज्ञान व जानकारी प्राप्त करके प्रकृति सौन्दर्य का भरपूर आनंद ले पाते हैं। पर्यावरण का महत्व एवं उनकी सूक्ष्म विषयों के बारे में रोचिका जी की कुशल प्रस्तुतीकरण 'गुन गुनी धूप' कहानी में मिलती है। कहानी का मुख्य पात्र राजू सर्दियों के मौसम में पिकनिक के बहाने घर से